कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 17 नवम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 11 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

सरसों की उन्नत खेती

6

मटर की खेती का पूरा फॉर्मूला

प्रदेश में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी शुरू

रायपुर। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत प्रदेश के किसानों से समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन का शुभारंभ किया गया। प्रदेश में कुल 195 उपार्जन केन्द्रों में 19464 क्विंटल धान का उपार्जन किसानों से किया गया। शासन द्वारा राज्य के 2,739 उपार्जन केन्द्रों में खरीदी संचालन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ पूर्ण कर ली गई हैं। उल्लेखनीय है कि सहकारी समितियों के कर्मचारियों द्वारा आंशिक रूप से अवैध हड़ताल पर जाने से उपार्जन प्रभावित होने की संभावना उत्पन्न हुई थी, जिसे शासन के निर्देश पर विपणन संघ द्वारा आउटसोर्सिंग के माध्यम से 2,739 डेटा एंट्री ऑपरेटरों की व्यवस्था कर सुचारू रूप से धान उपार्जन सुनिश्चित किया गया। कई जिलों में सहकारिता विभाग के कर्मचारियों ने भी धान उपार्जन की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए खरीदी कार्य को निरंतर बनाए रखा।

किसानों की सुविधा सर्वोपरि : श्री साय

शासन द्वारा धान खरीदी में संलग्न कर्मचारियों को अत्यावश्यक सेवा संधारण तथा विच्छिन्नता निवारण अधिनियम 1979 (ESMA) के तहत अधिसूचित कर तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है, जिससे उपार्जन प्रक्रिया निर्बाध रूप से संचालित रहे।

इस वर्ष धान उपार्जन को अधिक व्यवस्थित, पारदर्शी एवं किसान-उन्मुख बनाने के लिए उपार्जन केन्द्रों में ऑनलाइन टोकन एवं तुंहर टोकन प्रणाली को व्यापक रूप से लागू किया गया है। प्रदेश में जारी हुए कुल 2,029 टोकन में से 1,912 किसानों द्वारा तुंहर टोकन के माध्यम से आवेदन किया गया। इसके अतिरिक्त, किसान समिति स्तर पर भी टोकन हेतु आवेदन कर सकते हैं। इसके साथ ही प्रदेश स्तर पर हेल्पलाइन 1800 233 3663 के माध्यम से भी शिकायतें एवं जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। धान की तौल इलेक्ट्रॉनिक तौल मशीनों से की जा रही है, ताकि किसानों को उनके हर एक दाने का उचित मूल्य मिल सके। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने सभी कलेक्टरों एवं धान उपार्जन से संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि किसानों की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उपार्जन कार्य को व्यवस्थित, समयबद्ध और पारदर्शी रूप से संचालित किया जाए।

किसानों के हित में केंद्र ने पेश किया बीज विधेयक 2025 का मसौदा

कृषकों को मिलेगा गुणवत्तापूर्ण बीज

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्र सरकार ने कृषि मंत्रालय के तहत बीज विधेयक 2025 का मसौदा पेश किया है। यह नया विधेयक मौजूदा बीज अधिनियम, 1966 और बीज (नियंत्रण) आदेश, 1983 का स्थान लेगा। यह मसौदा केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जारी किया।

मसौदे का मुख्य उद्देश्य किसानों को गुणवत्तापूर्ण और किफायती बीज उपलब्ध कराना, नकली और घटिया बीजों की बिक्री पर रोक लगाना और किसानों को होने वाले नुकसान से बचाना है। इसके अलावा, यह विधेयक नवाचार को बढ़ावा देने, बीज आयात को आसान बनाने, और बीज आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाता है।

बीज विधेयक 2025 में यह प्रस्ताव भी रखा गया है कि नगण्य श्रेणी के अपराधों को अपराधमुक्त किया जाएगा, ताकि व्यापार में आसानी हो और किसानों और कारोबारियों पर अनुपालन का बोझ कम हो। लेकिन गंभीर उल्लंघनों पर कड़े दंड का प्रावधान बनाए रखा गया है।

मसौदा विधेयक अब सार्वजनिक परामर्श के लिए उपलब्ध है। सभी किसानों, विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव और टिप्पणियां ईमेल के माध्यम से भेजें। प्रतिक्रियाएं 11 दिसंबर, तक jsseeds-agri[at]gov[dot]in पर भेजी जा सकती हैं।

मसौदे और प्रतिक्रिया के प्रारूप की जानकारी के लिए मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट https://agriwelfare.gov.in पर जा सकते हैं। इस विधेयक के लागू होने से किसानों को बेहतर बीज, किफायती कीमतें, और सुरक्षित कृषि उत्पादन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन® ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; **वेबसाईट:** www.jains.com

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

किसानों को मिले 'पादप जीनोम संरक्षक पुरस्कार'

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में 'पादप जीनोम संरक्षक पुरस्कार समारोह और पीपीवीएफआरए अधिनियम, 2001 के रजत जयंती व पीपीवीएफआरए (पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण) के 21वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में भागीदारी की और चयनित किसानों को पुरस्कृत किया।

केंद्रीय मंत्री ने तेलंगाना के कम्यूनिटि सीड बैंक, पूर्व वर्धमान पश्चिम बंगाल के शिक्षा निकेतन, मिथिलांचल मखाना उत्पादक संघ, असम के सीआरएस-एनए दिहिंग तेंगा उन्नयन समिति, उत्तराखंड के श्री भूपेंद्र जोशी, केरल के श्री टी. जोसेफ, श्री लक्षण प्रमाणिक, श्री अनंतमूर्ति जे, बिहार के श्री नकुल सिंह, उत्तराखंड के श्री नरेंद्र सिंह सहित विभिन्न अन्य श्रेणियों में किसान भाई-बहनों को पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री चौहान ने कहा कि कृषि हमारे देश का मूल रहा है। अनेक बीजों की किस्में पोषण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन बीते वर्षों में कुछ किस्में विलुप्त होने की कगार पर आ गई थीं, जिन्हें सहेजने में किसानो ने प्रशंसनीय भूमिका निभाई है। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि राज्य मंत्रीद्वय श्री भागीरथ चौधरी एवं श्री रामनाथ ठाकुर, कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट, संयुक्त सचिव अजीत कुमार साहू, पीपीवीएफआरए के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, एवं रजिस्ट्रार-जनरल डॉ. डी.के. अग्रवाल उपस्थित थे।

देश में रबी बुवाई 208 लाख हेक्टेयर में हुई

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, 11 नवंबर 2025 तक कुल 208.19 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई पूरी की जा चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 188.73 लाख हेक्टेयर की तुलना में 19.46 लाख हेक्टेयर अधिक है।

दालों की बुवाई ने इस सीजन में विशेष बढ़त दर्ज की है। दालों के कुल रकबे में 3.88 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 52.82 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गया है। चना 37.43 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया, जिसमें 3.39 लाख हेक्टेयर की बढ़त दर्ज हुई। मसूर का क्षेत्र भी बढ़कर 6.83 लाख हेक्टेयर हो गया, जो पिछले वर्ष से 0.74 लाख हेक्टेयर अधिक है। सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही 'श्री अन्न' (मिलेट्स) श्रेणी में भी ठोस वृद्धि देखी गई। इन फसलों के तहत क्षेत्र बढ़कर 15.53 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 2.04 लाख हेक्टेयर अधिक है।

उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज करने वाली फसलों में ज्वार सबसे आगे रहा, जिसका बुवाई क्षेत्र बढ़कर 8.82 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। मक्का की बुवाई भी मजबूत रही और यह 4.26 लाख हेक्टेयर के स्तर पर दर्ज की गई। तिलहन फसलों की बुवाई में इस वर्ष अच्छा सुधार देखने को मिला है और कुल क्षेत्रफल में 3.24 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। तिलहनों में सबसे अधिक बढ़ोतरी रेपसीड और सरसों में हुई, जिनका क्षेत्र बढ़कर 64.23 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है-यह पिछले वर्ष की तुलना में 3.71 लाख हेक्टेयर की उल्लेखनीय बढ़त है।

इस वर्ष देश की प्रमुख रबी फसल गेहूं का क्षेत्र बढ़कर 66.23 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष से 9.68 लाख हेक्टेयर अधिक है। उधर, धान की बुवाई भी 7.44 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई, जिसमें 0.62 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
11 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**66.23**	**56.55**
चावल	**42.93**	**7.44**	**6.82**
दालें	**140.42**	**52.82**	**48.93**
चना	100.99	37.43	34.04
मसूर	15.13	6.83	6.08
मोटे अनाज	**55.33**	**15.53**	**13.5**
ज्वार	24.62	8.82	8.21
मक्का	23.61	4.26	3.63
तिलहन	**86.78**	**66.17**	**62.93**
सरसों	79.17	64.23	60.52
मूंगफली	3.69	0.79	1.13
अलसी	1.93	0.67	0.95
कुल	**637.81**	**208.19**	**188.73**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्त्रोत : कृषि मंत्रालय

प्रधानमंत्री 19 नवंबर को जारी करेंगे पीएम-किसान की 21वीं किस्त

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पीएम किसान सम्मान निधि योजना, प्रत्येक पात्र किसान परिवार को 6,000 रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान करती है। यह योजना 24 फरवरी, 2019 को शुरू की गई केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। अब तक, देश के 11 करोड़ से ज़्यादा किसान परिवारों को 20 किश्तों के माध्यम से 3.70 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि वितरित की जा चुकी है।

जल संरक्षण, प्राकृतिक और जैविक खेती की ओर बढ़ना आवश्यक : श्री डेका

प्राकृतिक खेती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए राज्यपाल

रायपुर। प्राकृतिक और जैविक खेती आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। रासायनिक उर्वरकों का उपयोग केवल उतना ही होना चाहिए जितना बिल्कुल जरूरी हो। किसानों में इस बात की जागरूकता लाना समय की मांग है। जल संरक्षण के लिए अभी प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में जल संकट और तेज़ी से बढ़ेगा। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने आज प्राकृतिक खेती विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम में उक्त विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी का आयोजन कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग तथा इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा किया गया जिसके उद्घाटन कार्यक्रम में श्री डेका मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने की।

राज्यपाल श्री डेका ने अपने संबोधन में कहा कि 1960 के दशक में जब देश खाद्यान्न संकट का सामना कर रहा था, तब हरित क्रांति ने बड़ी भूमिका निभाई। नए बीज, रासायनिक खाद, सिंचाई और मशीनों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई, जो उस समय देश के लिए बड़ी उपलब्धि थी।

उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में अति हानिकारक होती है। आज रासायनिक खादों और माइक्रोप्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग कई समस्याओं को जन्म दे रहा है। इसलिए जैविक और प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ना बेहद जरूरी है। इससे फसलों का मूल्य संवर्धन होगा और किसान बेहतर लाभ कमा सकेंगे।

राज्यपाल ने कृषि के विद्यार्थियों से अपील की कि पढ़ाई पूरी करने के बाद वे जैविक खेती को अपनाएं, जिससे अन्य किसान भी प्रेरित होंगे। उन्होंने कहा कि आज के समय में जैविक खेती बड़ा व्यवसाय बन चुका है और इसे सही दिशा देने की आवश्यकता है।

अपने संबोधन में श्री डेका ने छत्तीसगढ़ में जल दोहन की स्थिति पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि राज्य में अच्छी वर्षा होने के बावजूद कई क्षेत्रों में पानी की कमी रहती है। वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए डबरी निर्माण जैसे उपाय बढ़ाने होंगे। उन्होंने कहा कि पानी नहीं तो जीवन नहीं, इसलिए जल संरक्षण अनिवार्य है।

संगोष्ठी में कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने कहा कि आज सबसे बड़ी चुनौती यह है कि प्राकृतिक खेती को किस प्रकार व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जाए। रासायनिक खादों के अत्यधिक उपयोग से धरती विषैली हो रही है और कई तरह की बीमारियाँ बढ़ रही हैं। आने वाली पीढ़ी के हित में समय रहते बदलाव करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार जैविक खेती को बढ़ाने के लिए मिशन मोड में कार्य कर रही है।

कृषि उत्पादन आयुक्त एवं सचिव शहला निगार ने राज्य में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल ने स्वागत भाषण दिया।

कार्यक्रम में पद्मश्री सुश्री साबरमती सहित कई उत्कृष्ट किसानों को सम्मानित किया गया। इसके पूर्व राज्यपाल श्री डेका ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया जिसमें जैविक एवं प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों द्वारा उत्पादित सामग्रियों का प्रदर्शन किया गया था।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ बीज विकास निगम के अध्यक्ष श्री चंद्रहास चंद्राकर, छत्तीसगढ़ कृषक कल्याण परिषद के अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्रवंशी, कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, किसान, कृषि सखियाँ तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

प्राईस सपोर्ट स्कीम के तहत होगी दलहन-तिलहन की खरीदी

मंत्रिपरिषद के निर्णय

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय में आयोजित कैबिनेट की बैठक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए इसमें मंत्रिपरिषद द्वारा खरीफ एवं रबी विपणन मौसम में दलहन-तिलहन फसल के उपार्जन हेतु पूर्व वर्ष की भांति 'प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान' प्राईस सपोर्ट स्कीम (पीएसएस) के तहत उपार्जन किए जाने का निर्णय लिया गया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान अंतर्गत खरीफ विपणन मौसम में अरहर, मूंग, उड़द, मूंगफली एवं सोयाबीन तथा रबी मौसम में दलहन-तिलहन फसल जैसे चना, सरसों, मसूर का उपार्जन समर्थन मूल्य पर किया जाता है। दलहन-तिलहन का समर्थन मूल्य पर उपार्जन की व्यवस्था प्रदेश की मंडियों में होने से बाजार में प्रतिस्पर्धा बनी रहती है, जिसके कारण कृषकों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त होने की संभावना होती है।

मंत्रिपरिषद द्वारा छत्तीसगढ़ शासन कार्य (आवंटन) नियम में संशोधन करते हुए सार्वजनिक उपक्रम विभाग को वाणिज्य और उद्योग विभाग में और बीस सूत्रीय कार्यान्वयन विभाग का संविलियन योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग में करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

यह निर्णय शासकीय कार्य में सुशासन को बढ़ावा देने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। इसका उद्देश्य ''मिनिमम गवर्मेंट मैक्सिमम गवर्नेंस'' का क्रियान्वयन सुनिश्चित करना है।

मंत्रिपरिषद ने राज्य में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के उद्देश्य से खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के लिए समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन हेतु बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं हेतु स्वीकृत 15 हजार करोड़ रूपए की शासकीय प्रत्याभूति को खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के लिए पुनर्वेधीकरण करने के साथ ही विपणन संघ को अतिरिक्त शासकीय प्रत्याभूति राशि रूपये 11,200 करोड़ प्रदाय किए जाने का निर्णय लिया।

उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने अपने विधानसभा क्षेत्र के ग्राम बालवाड़ी राजाढार, तरैयाबहरा, बोथी, झलमला एवं शीतलपानी में जनचौपाल का आयोजन किया। जहां स्थानीय ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं एवं मांगों को भी उनके समक्ष रखा और उन्होंने सभी का त्वरित निराकरण किया।

फसलों, मिट्टी-पानी में कीटनाशक अवशेषों की निगरानी करेगा कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विश्वविद्यालय की फाइटोसैनिटरी लैब को भारत सरकार से मिली मान्यता

रायपुर। कृषि विश्वविद्यालय की फाइटोसैनिटरी लैब को भारत सरकार से मिली मान्यता इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय को एक और उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल हुई है। कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित फाइटोसैनिटरी लैब अब छत्तीसगढ़ में विभिन्न खाद्यान्न फसलों, फलों, सब्जियों, आदि के साथ ही मिट्टी, पानी जैसे पर्यावरणीय घटकों में भी कीटनाशक अवशेषों की निगरानी करेगी। भारत सरकार के कृषि एवं किसान मंत्रालय द्वारा कृषि विश्वविद्यालय के आण्विक जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संचालित फाइटोसैनिटरी प्रयोगशाला को राष्ट्रीय कीटनाशक अवशेष निगरानी योजना के तहत अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। कृषि विश्वविद्यालय की फाइटोसैनिटरी लैब यह उपलब्धि प्राप्त करने वाली छत्तीसगढ़ की एकमात्र तथा देश की 36वीं प्रयोगशाला है जिसे इस राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

गौरतलब है कि भारत सरकार की इस योजना का उद्धेश्य खाद्य पदार्थो, मिट्टी एवं जल जैसे पर्यावरणीय नमूनों में कीटनाशक अवशेषों की नियमित निगरानी कर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना, जल गुणवत्ता का मूल्यांकन करना तथा एकीकृत कीट प्रबंधन एवं उत्तम कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहन देना है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर प्रयोगशाला से संबंधित वैज्ञानिकों एवं उनके सहयोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि यह उपलब्धि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक उत्कृष्टता तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं किसान कल्याण के प्रति विश्वविद्यालय की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

उल्लेखनीय है कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में फाइटोसैनिटरी प्रयोगशाला की स्थापना राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत केन्द्र एवं राज्य सरकार से प्राप्त वित्तीय सहायता से हुई है। इस प्रयोगशाला के संचालन के लिए भी केन्द्र और राज्य सरकार से नियमित सहायता प्राप्त हो रही है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्दिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

हरिन छलांग कद्दू-काकरी, पैगे-पैगे कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखास (ईख)।।

सही बीज, उर्वरक ही रबी की रौनक

प्रकृति की विचित्र मेहरबानी से इस वर्ष अक्टूबर के आखिरी सप्ताह तक पानी बरसता रहा इससे रबी फसलों की बुआई के लिये, भूमि की तैयारी के लिये अच्छा अवसर मिल गया, जहां तक अच्छे उत्पादन का प्रश्न है। यदि भूमि की तैयारी अच्छी तरह से हो जाये तो बुआई अंकुरण और स्वस्थ पौधों के मिलने का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे देश का लगभग 60 प्रतिशत भाग ऐसा है जहां पर रबी की बुआई वर्षा आधारित होती है और इसी हिस्सों को यदि नमी मिल गई हो तो वहां की औसत उपज बढ़ाना आसान हो जाता है। जहां तक गेहूं का प्रश्न है अधिकांश क्षेत्र सिंचित होता है और सिंचाई के लिये जल के विभिन्न श्रोत होते हैं। सर्वाधिक सिंचाई कमांड क्षेत्र में उपलब्ध रहती है, रबी की दूसरी फसल चना है जिसकी बुआई के लिए भूमि चयन, भूमि की तैयारी से लेकर रखरखाव तक में आमतौर पर उतनी चिंता नहीं की जाती है जितनी गेहूं की, की जाती है चना के साथ-साथ अन्य दलहनी फसलें जैसे मसूर, मटर आदि फसलें भी ऐसी हैं जिनका यदि उचित रखरखाव किया जाये तो उत्पादकता बढ़ाई जाना कोई असंभव बात नहीं है। दलहनी फसलें प्रोटीन की प्रमुख श्रोत होती हैं जिसकी आवश्यकता आज आम आदमी को बहुत है। आमतौर पर रबी दलहनी फसलों में उर्वरक उपयोग बहुत कम होता है और जहां होता है वहां भी असंतुलित होता है जबकि इन फसलों में फास्फोरस तथा पोटाश का उपयोग नत्रजन की तुलना में कम होता है। चूंकि दलहनी फसलें वायुमंडल से नत्रजन एकत्रित करने की क्षमता रखती हैं इस कारण अन्य आवश्यक उर्वरकों की पूर्ति करके अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा राईजोबियम कल्चर तथा पीएसबी का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए

ताकि अच्छा अंकुरण अधिक नाईट्रोजन तथा भूमि में उपलब्ध फास्फेट का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके। ऐसा करके दलहनी विशेषकर चने की उत्पादकता सरलता से बढ़ाई जा सकती है। उल्लेखनीय है कि देश की जनसंख्या 2040 तक लगभग 150 करोड़ तक पहुंच सकती है। जिसके लिये लगभग 350 टन दालों की आवश्यकता पड़ सकती है जो वर्तमान के उत्पादन से लगभग दोगुना है। मांग की पूर्ति के लिये विवश शासन को बाहर से दलहन का आयात करना होगा जिसका भार आम लोगों की आर्थिक संतुलन को भी बिगाड़ सकता है। पिछले दिनों बढ़े दलहन के दाम की मार आज तक लोगों को याद है। इस कारण हमें हर संभव प्रयास करके दलहनों की उत्पादकता बढ़ाने के लिये कम लागत की तकनीकी का अंगीकरण शत-प्रतिशत करना ही होगा। रबी का राजा गेहूं का रखरखाव प्रायः हर जगह किया जाता है। क्योंकि उसके उत्पादन की समस्या वर्तमान में उपलब्ध एक दर्जन से अधिक विकसित किस्मों के कारण सुलझ गई है। पुरानी जातियों जैसे डब्ल्यू एच-147 या लोक-1 जिन्हें आज भी कुछ क्षेत्र पकड़े हुए हैं। निश्चित ही लक्षित उत्पादन से दूर रहेंगे। कंडुआ तथा गेरूआ इन दोनों जातियों से हानि की संभावनाओं से कोई इंकार नहीं कर सकता है। दूसरी बात दो या कहीं-कहीं तीन गुना बीज दर डालकर अधिक उत्पादन की कल्पना करता किसान आज भी है। अधिक पौध संख्या से उत्पादन के आंकड़ों को पाना संभव नहीं है जरूरी तो यह है कि एक इकाई क्षेत्र में पर्याप्त पौधों की जो सिफारिश के आधार पर बीज दर से प्राप्त की जा सकती है। खाद, बीज का मिश्रण कदापि नहीं किया जाये। राई-सरसों, अलसी की बुआई गहराई पर ना हो तथा सभी फसलों पर क्रांतिक अवस्था में ही सिंचाई की जाये और खर्च की तकनीकी अपनाकर रबी फसलों से लक्षित उत्पादन लेकर स्वयं की, प्रदेश की, देश की प्रगति प्रशस्त की जाये।

खाली थालियाँ, भरे गोदाम : कैसी यह दुनिया हमारी ?

● प्रो. आर.के. जैन 'अरिजीत'

जब एक भूखे बच्चे की आँखों में रोटी का सपना धुँधला पड़ता है, तो मानवता की सारी चमक एक पल को थम सी जाती है। न चाँद की उड़ानें, न टेक्नोलॉजी की चकाचौंध, न ही गगनचुंबी इमारतें उस एक निवाले का मोल रखती हैं, जो किसी की भूख मिटा दे। हर साल 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस यह कसक जगाता है—यह महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक आह्वान है- एक ऐसी दुनिया बनाने का, जहाँ हर थाली में पौष्टिक भोजन हो और हर भविष्य सुरक्षित। 2025 की थीम, 'बेहतर भोजन, बेहतर भविष्य के लिए एकजुटता,' हमें भोजन की उपलब्धता, गुणवत्ता और टिकाऊपन के लिए सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश देती है। यह वह सपना है, जहाँ भूख सिर्फ एक भूली-बिसरी कहानी बन जाए।

1945 में संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की स्थापना ने विश्व खाद्य दिवस की नींव रखी, जिसका लक्ष्य था हर इंसान तक भोजन को गरिमा के साथ पहुँचाना। मगर 80 साल बाद भी यह मिशन अधूरा है। विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के मुताबिक, 82.8 करोड़ लोग आज भी भूख की चपेट में हैं- यह आँकड़ा सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि उन माँओं की चुप्पी है, जो अपने बच्चों को भूखा सुलाती हैं; उन किसानों की पीड़ा है, जो दुनिया को खिलाते हुए खुद भूख से जूझते हैं। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि हर साल 1.3 अरब टन भोजन बर्बाद होता है—इतना कि यह पूरे उप-सहारा अफ्रीका को एक साल तक खिला सकता है। एक ओर खाली थालियाँ बेचैन हैं, तो दूसरी ओर डस्टबिन भोजन से अटे पड़े हैं। यह विडंबना हमसे सवाल करती है- क्या हमारी प्रगति अधूरी नहीं?

भारत में यह संकट और गहरा है। विश्व का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश होने के बावजूद, ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2024 में भारत 127 देशों में से 105वें पायदान पर है। यहाँ 19.4 करोड़ लोग भूखे

हैं, और 43 प्रतिशत बच्चे कुपोषण की मार झेल रहे हैं। 'अन्नदाता' कहलाने वाला किसान कर्ज, बेमौसम बारिश और बाजार की अनिश्चितताओं में फँसकर अपने परिवार को दो जून की रोटी नहीं दे पाता। फिर भी, भारत की मिट्टी में वह शक्ति है, जो न सिर्फ देश, बल्कि पूरी दुनिया को खिला सकती है। 2025 की थीम हमें यही सिखाती है कि सरकार, किसान, वैज्ञानिक और समाज की एकजुटता ही वह पुल है, जो खेतों से थालियों तक भोजन पहुँचाएगा। हाथ में हाथ मिलाकर भूख को इतिहास बना दें।

भोजन का संकट केवल मात्रा का नहीं, बल्कि पहुँच, गुणवत्ता और समानता का है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट बताती है कि 2020 के बाद से खाद्य कीमतों में 20 प्रतिशत की उछाल ने गरीब देशों में भोजन को और दुर्लभ बना दिया। भारत में राशन प्रणाली और सब्सिडी जैसी योजनाएँ हैं, मगर भ्रष्टाचार और अक्षमता के कारण लाखों जरूरतमंद भूखे रह जाते हैं। इससे भी गंभीर है 'छिपी भूख' की मार—लाखों लोग भोजन तो खाते हैं, लेकिन पोषण की कमी के कारण बच्चों में स्टंटिंग और वेस्टिंग जैसे रोग बढ़ रहे हैं। 2025 की थीम 'बेहतर भोजन' यही माँग करती है कि हम केवल पेट भरने नहीं, बल्कि हर व्यक्ति तक पौष्टिक, संतुलित आहार पहुँचाने पर ध्यान दें, जो उनकी शारीरिक और मानसिक सेहत को संवारे।

2025 की थीम पर्यावरण और भोजन के अटूट रिश्ते को भी उजागर करती है। जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की घटती उर्वरता, और जल संसाधनों का दोहन हमारी खाद्य प्रणाली को कमजोर कर रहे हैं। एफएओ के मुताबिक, विश्व का 70 प्रतिशत जल कृषि में खर्च होता है, जिसका बड़ा हिस्सा बर्बाद हो जाता है। सतत कृषि, जैविक खेती, ड्रिप इरिगेशन, और वर्षा जल संचय अब जरूरत बन चुके हैं। हमें स्थानीय, मौसमी भोजन को बढ़ावा देना होगा, ताकि आयात कम हो और किसानों को लाभ मिले। साथ ही, भंडारण और परिवहन में होने वाली बर्बादी को रोकने के लिए खाद्य आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना होगा। यह थीम हमें सिखाती है कि बेहतर भविष्य तभी संभव है, जब हम प्रकृति के साथ कदम मिलाएँ।

जब दुनिया तकनीकी तरक्की पर गर्व कर रही है, तब भी करोड़ों लोग भूख से जूझ रहे हैं। हर साल मनाया जाने वाला विश्व खाद्य दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास का असली मापदंड पेट भर रोटी है। 2025 की थीम 'बेहतर भोजन, बेहतर भविष्य के लिए एकजुटता' इस बात पर बल देती है कि भोजन केवल संसाधन नहीं, बल्कि मानवता का साझा अधिकार है।

भारत में भोजन केवल भौतिक जरूरत नहीं, बल्कि संस्कृति और प्रेम का प्रतीक है। 'अन्नपूर्णा' का रूप लिए भोजन गाँवों में मेहमानों को खिलाने का गर्व और एकता का संदेश देता है। मगर आधुनिक उपभोक्तावाद ने हमें फास्ट फूड और पैकेज्ड भोजन की चमक में उलझा दिया, जबकि हम अपनी जड़ों बाजरा, ज्वार, रागी जैसे पौष्टिक और टिकाऊ अनाजों को भूलते जा रहे हैं। 'बेहतर भोजन' हमें अपनी परंपराओं की ओर लौटने और स्थानीय, पर्यावरण-अनुकूल भोजन को अपनाने का आह्वान करता है, जो न केवल सेहत दे, बल्कि धरती को भी बचाए।

भारत सरकार की योजनाएँ—राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013, मिड-डे मील, पोषण अभियान, और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना—भूख और कुपोषण से लड़ने की दिशा में अहम कदम हैं। मगर इनकी सफलता समाज की भागीदारी पर टिकी है। भारत में हर साल 67 मिलियन टन भोजन (अनुमानित कीमत लगभग रू. 92,000 करोड़) बर्बाद होता है- यह एक त्रासदी है। जरूरत के हिसाब से खाना खरीदना, बचे हुए भोजन को दान करना, और सामुदायिक रसोईघरों में योगदान देना जैसे छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। 'हाथ में हाथ' मिलाकर भूख को हराएँ और हर थाली को समृद्ध करें।

तकनीक भूख के खिलाफ एक शक्तिशाली हथियार बन सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), ड्रोन, और सैटेलाइट्स के जरिए फसलों की निगरानी, सटीक मौसम भविष्यवाणी, और स्मार्ट आपूर्ति श्रृंखलाएँ भोजन की बर्बादी को कम कर रही हैं। मगर यह ताकत तभी सार्थक है, जब यह भारत के 86 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसानों तक पहुँचे, जिनके पास आधुनिक संसाधनों की कमी है। यदि हम इन किसानों को तकनीक, प्रशिक्षण, और बाजार से जोड़ सकें, तो खाद्य सुरक्षा का सपना हकीकत में बदल सकता है। यह एकजुटता ही खेतों से थालियों तक भोजन का सफर सुनिश्चित करेगी।

विश्व खाद्य दिवस हमें सिखाता है कि भूख केवल पेट की नहीं, आत्मा की भी होती है। किसी भूखे को भोजन देना सिर्फ उसका पेट भरना नहीं, बल्कि उसकी गरिमा और उम्मीद को पोषित करना है। 'हाथ में हाथ' का मतलब है कि यह जिम्मेदारी हम सबकी है। हर थाली में अन्न का होना महज एक लक्ष्य नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जवाबदेही है। इस विश्व खाद्य दिवस पर संकल्प लें कि हम भोजन की बर्बादी रोकेंगे, जरूरतमंदों के साथ अन्न बाँटेंगे, और एक ऐसी दुनिया बनाएँगे जहाँ भूख सिर्फ एक भूली-बिसरी कहानी हो। क्योंकि जब हर चेहरे पर भोजन की मुस्कान खिलेगी, तभी हमारी धरती सही मायनों में समृद्ध और शांतिपूर्ण होगी। **(सप्रेस)**

रबी फसलों में जल प्रबंधन

● दीपक चौहान ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह
● डॉ. अल्पना शर्मा ● भागवत प्रसाद पंद्रे
● डॉ. बृजकिशोर प्रजापति

जल ही जीवन है, यह अटल सत्य है, क्योंकि जल मानव, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं के जीवन-यापन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग है। जल कृषि बागवानी के उत्पादन में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण आदान है, जन जीवों की कोशिकाओं में जल 70-90 प्रतिशत तक पाया जाता है। जल पादपों के अन्दर होने वाली समस्त चयापचय क्रियाओं के सुचारु रूप से संचालन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह प्रकाश-संश्लेषण प्रक्रिया, जोकि समस्त ब्रह्माण्ड की अकेली प्रतिक्रिया है, हेतु माध्यम का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त जल औद्योगिक उत्पादन, ऊर्जा स्रोत एवं यातायात में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सिंचाई का महत्व

● पौधों का 80-90 प्रतिशत भाग पानी का बना होता है और रसायनिक रूप में पानी, पौधों का एक अंग होता है।

● कोशिका द्रव का मुख्य भाग (80-90 प्रतिशत) पानी है। अतः कोशिका विभाजन बिना जल के सम्भव नहीं है। कहने का अभिप्राय यह है कि पौधों की पूर्ण वृद्धि जल पर ही निर्भर है।

● बीज के अन्दर भ्रूण का अंकुरण बिना जल के नहीं हो सकता है।

● पौधों में जल वाहक का कार्य भी करता है। जड़ें पोषक तत्वों को घोल के रूप में चूसती हैं व जल के माध्यम से चूसे गये पोषक तत्व ही पौधों के अन्य आवश्यक भागों में पहुँचते हैं।

● प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया में जल एवं कार्बन डाइऑक्साइड कच्चे पदार्थ के रूप में प्रयोग होते हैं, जो प्रकाश की उपस्थिति में पर्णहरित द्वारा कार्बोहाइड्रेट में परिवर्तित हो जाते हैं अर्थात् पौधों के लिये कार्बोहाइड्रेट आवश्यक पदार्थ भी जल की उपस्थिति में ही बनते हैं।

● पत्तियों में निर्मित होने वाले कार्बोहाइड्रेट का पत्तियों से दूसरे भागों में स्थानान्तरण भी जल द्वारा ही होता है।

● जल पौधों की कोशिकाओं को फुलाकर रखता है, जिसके फलस्वरूप कोशिकाएँ आकार में वृद्धि करके फसलों के पकने के समय में वृद्धि कर सकती हैं जिसके फलस्वरूप बाजार की मांग के अनुसार फसलें काटी जा सकती है।

● खेत में पानी लगाने से फसलों के हानिकारक कीट जैसे दीमक आदि को नष्ट किया जा सकता है।

● जल पौधों की जलोत्सर्जन क्रिया के लिये भी आवश्यक है। इस प्रक्रिया में पौधे अपने आप को वातावरण के अधिक तापमान (लू), कम तापमान (पाला) आदि से सुगमता से बचा सकते हैं।

● निरन्तर भूमि की सिंचाई करने से मृदा कणों के आकार में कमी होती है, जो फसलों की बढ़वार के लिये उपयुक्त है।

● भूमि में फसलों की वृद्धि हेतु अनेक लाभदायक सूक्ष्म जीवाणु जैसे राइजोबियम, जीवांश पदार्थ को सड़ाने वाले सूक्ष्म जीवाणु जैसे नाइट्रोसोमोनास, नाइट्रोसो को कम करके अनेक लाभदायक फफूंदियाँ, एलगी, एंजाइम भी मृदा नमी की उपयुक्त अवस्था पर ही पनपते हैं।

● लवणीय या ऊसर मृदा के सुधार के लिये विषैले प्रभाव के तत्वों का उदीलन सिंचाई द्वारा ही सम्भव है या सिंचाई जल में घोलकर इन विषैले लवणों को खेत से बाहर निकालते हैं।

सिंचाई कब करें ?

रबी फसलों में सिंचाई योजना बनाते समय मिट्टी का प्रकार, फसल, फसल की किस्म, वृद्धि काल, मिट्टी में जीवांश पदार्थ की मात्रा और खेत में विगत वर्ष बोई गयी फसल आदि का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। जब भूमि में जल की इतनी कमी हो जाए कि पौधों की वृद्धि एवं विकास दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, उस अवस्था में आवश्यकता अनुसार सिंचाई कर दें।

सिंचाई का समय

जब पौधों की वृद्धि एवं विकास में उपलब्ध नमी के कारण महत्वपूर्ण कमी आनी शुरू हो जाए, तब ही सिंचाई कर दें। खेत में सिंचाई करने का अनुमान निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर भी लगाया जा सकता है:-

पौधों की बाहरी दशा के आधार पर:- विभिन्न पौधों में सिंचाई की आवश्यकता विभिन्न लक्षणों जैसे पत्तियों का मुरझाना, पत्तियों का रंग बदलना अथवा कम या अधिक गहरा हरे रंग आदि को देखकर लगाया जा सकता है।

मिट्टी के गुण:- मिट्टी के भौतिक गुणों को देखकर सिंचाई के समय का पता लगाया जा सकता है। चिकनी मिट्टी में नमी की कमी के कारण दरारें पड़नी शुरू हो जाती हैं।

मृदा नमी माप कर:- फसल की सिंचाई का सही पता लगाने हेतु रेपिड मोयस्चर और टेनशियोमीटर का उपयोग किया जा सकता है।

पौधों के जीवन में क्रान्तिकारी अवस्थाओं के आधार पर:- समस्त फसलों के पौधों के जीवन काल में कुछ ऐसी क्रान्तिकारी अवस्थाएँ होती हैं जिनमें पौधे भूमि से पानी अधिक मात्रा में चूसते हैं। यदि इन अवस्थाओं में भूमि में पानी की कमी हो जाती है तो पौधों के विकास, बढ़वार एवं उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इन अवस्थाओं को सिंचाई की दृष्टि से क्रान्तिक अवस्थायें कहते हैं।

विभिन्न फसलों की क्रान्तिक अवस्थाओं के आधार पर सिंचाई कब और कितनी करें -

गेहूं

सामान्यतः बौने गेहूं की अधिकतम उपज प्राप्त करने हेतु हल्की भूमि में जल की उपलब्धता के आधार पर सिंचाइयाँ निम्न अवस्थाओं में करें, अन्यथा इन अवस्थाओं में जल की कमी का उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ेगा। सिंचाई सदैव हल्की (6 सें.मी. गहरी) करें।

पहली सिंचाई - ताज मूल वृद्धि अवस्था में करें, यह अवस्था आमतौर पर बीज बोने के 20-25 दिन बाद आ जाती है। **दूसरी सिंचाई -** कल्ले फूटने की अवस्था में करें। यह अवस्था आमतौर पर बीज बोने के 40-50 दिन बाद आ जाती है। **तीसरी सिंचाई-** दीर्घ संधि अथवा गाँठ निर्माण की अवस्था में करें यह अवस्था बीज बोने के 60-65 दिन बाद आती है। **चौथी सिंचाई-** पुष्पावस्था में सिंचाई करें। यह अवस्था बीज बोने के 80-85 दिन बाद आती हैं। **पाँचवी सिंचाई-** दुग्धावस्था में सिंचाई करें। यह अवस्था बीज बोने के 100-105 दिन बाद आ जाती है। **छठी सिंचाई-** दाने भरने की अवस्था में सिंचाई करें।

जौ

पहली सिंचाई- कल्ले फूटने के समय अर्थात् बीज बोने के 30-35 दिन बाद। **दूसरी सिंचाई-** दुग्धावस्था में सिंचाई करें।

चना

पहली सिंचाई-बोने के 45-60 दिन बाद, फूल आने से पूर्व करें। **दूसरी सिंचाई-** फलियों में दाने बनने के समय करें। यदि जाड़ों में वर्षा हो जाए, तो दूसरी सिंचाई न करें।

मटर

पहली सिंचाई-फूल आने के समय पर सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-**दाने भरते समय एक सिंचाई करें। ऐसा करने से अधिक उपज मिलती है।

मसूर

पहली सिंचाई- फूल आने के समय सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-** फलियों के निर्माण के समय सिंचाई करें। शरद कालीन वर्षा हो तो सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं है।

राई/सरसों

पहली सिंचाई- फूल आने की अवस्था में बोने के 40-45 दिन बाद सिंचाई करें। **दूसरी सिंचाई-** फली निर्माण की अवस्था में बोने के 80-85 दिन बाद सिंचाई करें। **तीसरी सिंचाई-** फलियों में दाने भरने की अवस्था में बोने के 105-110 दिन बाद सिंचाई करें।

मटर की खेती का पूरा फॉर्मूला

सही बीज मात्रा, उर्वरक और बुवाई से बढ़ेगी पैदावार

देशभर में रबी फसलों की बुवाई शुरू हो गई है। ऐसे तो रबी सीजन की प्रमुख फसलें गेहूं और सरसों को माना जाता है, लेकिन इस सीजन में दलहन फसलें भी बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं, जो किसानों को फायदे का सौदा साबित होती हैं। मटर, एक ऐसी फसल है, जो न केवल अपने पौष्टिक गुणों से भरपूर है, बल्कि भारतीय रसोई में भी इसकी खास अहमियत है। साथ ही, मटर का उपयोग दाल के रूप में भी किया जाता है। अगर आप भी इस सीजन में मटर की खेती करने का विचार कर रहे हैं, तो आपको सबसे पहले खेत की तैयारी और उचित देखभाल और उन्नत किस्मों के बारे में जानना बेहद जरूरी है। सही तकनीक और अच्छे ख्याल से आप मटर की बेहतरीन पैदावार प्राप्त कर सकते हैं और अपनी शानदार कमाई कर सकते हैं।

खेत की तैयारी कैसे करें

मटर एक शीत ऋतु की फसल है, जो ठंडे मौसम में अच्छी पैदावार देती है। इस फसल के लिए भुरभुरी और दोमट मिट्टी उत्तम मानी जाती है, क्योंकि ऐसी मिट्टी में पानी का संचय और वायु का संचार अच्छा होता है। मटर के अंकुरण के लिए 22 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे उपयुक्त होता है। इसके अलावा, मटर की वृद्धि के लिए 13 से 18 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे आदर्श माना जाता है। पाले के प्रभाव से मटर की फसल को बहुत नुकसान हो सकता है, खासकर पुष्पन अवस्था में। इसलिए, मटर को पाले से बचाने के लिए खेत की उचित देखभाल करनी जरूरी है। इस फसल को पाले से सुरक्षित रखने के लिए खेत में पलेवा (गहरी जुताई) करना और पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

बीज की मात्रा

शीघ्र पकने वाली किस्मों के लिए 100-120 किग्रा एवं मध्यम व देर से पकने वाली किस्मों के लिए 80 से 90 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बीज उपचार

बीज को थायरम 3 ग्राम प्रति किलो या बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से उपचारित कर लें एवं इसके बाद 3 ग्राम प्रति किलोग्राम राइजोबियम से भी उपचारित करें।

बीज बोने की दूरी

शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 5-6 सेमी रखें। मध्यम एवं देर से पकने वाली किस्मों में, 45 सेमी पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेमी रखें। खेत में पलेवा देकर बतर आने पर 5-7 सेमी गहराई पर बोनी करें।

खाद एवं उर्वरक

अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 20 टन प्रति हे. की दर से खेत की तैयारी के समय में अच्छी तरह से मिला दें। 40 किग्रा यूरिया, 375 सिंगल सुपर फास्फेट किग्रा एवं 50 म्यूरेट ऑफ पोटाश बुवाई के समय दें।

खरपतवार नियंत्रण

खेतों में पलेवा करके खेत को तैयार करने में काफी संख्या में खरपतवार खत्म हो जाते हैं। रसायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 48 घंटे के भीतर पेंडीमिथालीन नामक दवा 3.3 किग्रा/ हे. की दर से 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़कें।

उन्नतशील किस्में

पूसा प्रगति - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित मटर की किस्म पूसा प्रगति किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रही है। यह एक जल्दी पकने वाली बौनी किस्म है। खास बात है कि इस किस्म पर चूर्णी फफूंदी नामक रोग नहीं लगता है। इसकी लंबाई 9-10 सेमी होती है और इसके प्रत्येक फली में 8-10 दाने पाये जाते है। यह किस्म महज 60-65 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी उपज 70 क्विंटल हरी फलिया प्रति हेक्टेयर है।

पीएलएम-3 - मटर की खेती के लिए पीएलएम-3 किस्म भी

किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह किस्म 60-65 दिन में तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। इसके फलियों की लम्बाई 8-10 सेमी होती है, जिसकी प्रत्येक फलियों में 8-10 दाने पाये जाते है। इसकी उपज 90 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरी फलियां है।

जवाहर मटर-3- यह किस्म टी-19 एवं अर्लीबेजर के क्रास से विकसित की गई है। इसमें फलियों की लम्बाई 6-7 सेमी एवं फली में दाने 7 तक होते है। उपज 75 क्विंटल प्रति हे. फलियां है।

जवाहर मटर-4- यह किस्म बीज की बुवाई से 75 दिन में तैयार हो जाती है। फलियों की लम्बाई 7 सेमी एवं फलियों में 6 दाने पाये जाते है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28.7 प्रतिशत तक होती है।

जवाहर मटर-1- यह जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई है। इसकी तुड़ाई 70-80 दिन में आरंभ हो जाती है। उपज 90-120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर फली है। दानों की संख्या 8 से 9 एवं प्रोटीन प्रतिशत 24.6 प्रतिशत तक होता है।

रेज्ड बेड पद्धति से चने की उत्पादन तकनीकी

● डॉ. एस.एस. धाकड़ ● डॉ. स्वप्निल दुब
● डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी

उन्नत किस्में

जे.जी.-11, 16, 74, 130, 218, 412, 322, जाकी-9218, जवाहर चना काबुली-1, 3, काक-2, आई.सी.सी.व्ही.-2, विजय, विशाल, जे.जी.-63, 226, 6, 14, आर.व्ही.जी.-201, आर.व्ही.जी.-202, आर.व्ही.जी.-203, जे.जी.-12, जे.जी.-36

उन्नत उत्पादन तकनीक

रेज्ड बेड पद्धति, उकठा निरोधी किस्में व एकीकृत कीट व रोग प्रबंधन तकनीक को अपनाकर चने का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। चना की बुआई के लिए रेज्ड बेड प्लान्टर का उपयोग किया जाता है। इसमें मेढ़ की ऊंचाई लगभग 15-20 से.मी. तथा मेढ़ से मेढ़ की दूरी 50-60 से.मी. रखी जाती है। एक मेढ़ के ऊपर फसल की दो कतारें 20-25 से.मी. की दूरी पर रखी जाती है। इस ऊची मेढ़ पर फसल की कतारें लगाने से पौधे की जड़ों में हवा का आवागमन अच्छी तरह से होता हैं जिसमें चना की जड़ों में बनने वाली गठानें अधिक से अधिक एवं बड़े आकार की बनती है। इस विधि में ऊँची मेढ़ के साथ-साथ एक गहरी नाली भी बनती है। वर्षा के दिनों में अधिक वर्षा की स्थिति में वर्षा का जल इन नालियों के माध्यम से खेत के बाहर चला जाता हैं जिसमें चना की फसल मेढ़ पर होने के कारण पानी के सम्पर्क में नहीं आती है फसल खराब होने से बच जाती है तथा कम वर्षा की स्थिति में दोनों तरफ से नालियों को बंद कर दिया जाता है।

रेज्ड बेड पद्धति के लाभ

● सिंचाई के पानी का व्यवस्थापन अच्छी तरह से होता है। 30 प्रतिशत पानी की बचत होती है। ● समतल क्यारी विधि की अपेक्षा 20 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त होती है। ● वर्षा जल के अच्छे निकास के कारण नम भूमि में भी अच्छा उत्पादन। ● उर्वरक के सही व्यवस्थापन के कारण उर्वरक उपयोग क्षमता में बढ़ोतरी। ● बीज दर कम, जिसमें पौधों की संख्या नियंत्रित की जा सकती है।

● मेढ़ के बीच के खरपतवारों का यंत्रों के माध्यम से नियंत्रण। ● मेढ़ से मेढ़ की दूरी पर्याप्त होने से पौधों की कैनोपी को सूर्य की किरणें अधिक से अधिक मिलती हैं जिससे पौधें की शक्ति बढ़ती है तथा आस-पास की मिट्टी भी सूखी रहती है जिससे पौधों के झुकने की समस्या नहीं रहती है।

● समतल बुवाई विधि की अपेक्षा इसमें अंकुरण क्षमता अधिक होती है। क्योंकि समतल विधि में बीज को जमीन के अंदर डाला जाता है। जिससे पौधे को जमीन से बाहर निकलने में अधिक ऊर्जा की जरुरत होती है।

प्रमुख सावधानियां

● खेत की अच्छे से जुताई तथा समतलीकरण की आवश्यकता होती है। ● बुवाई के समय यह सुनिश्चित करें कि बीज नमी में ही डल रहा है तथा पर्याप्त गहराई पर डल रहा है। ● बीज को बोने से पहले अंकुरण क्षमता की जांच अवश्य करें तथा उपचार कर ही बीज बोयें।

भूमि की तैयारी

चने की खेती के लिये दोमट, मध्यम भारी भूमि जहाँ पानी का निकास अच्छा हो, उपयुक्त है। खेत की तैयारी के लिए पाटा लगाकर खेत को भुरभुरा एवं समतल बना लें। खेत में पूर्व फसल के अवशेष नहीं हों एवं अंतिम जुताई के समय दीमक से बचाव हेतु क्लोरोपाइरीफॉस चूर्ण 1.5 प्रतिशत 20-25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

बीज दर

80-100 किलो बीज प्रति हेक्टेयर। छोटे दाने वाली प्रजाति 75 से 80 कि.ग्रा./ हेक्टेयर बीज एवं बड़े दाने वाली एवं काबुली प्रजातियों के लिए 100 कि.ग्रा./ हेक्टेयर।

बीजोपचार

विभिन्न प्रकार के फफूंद जनित रोगों से बचाव हेतु चने के बीज को बीजोपचार कर बुवाई करें। चने के बीज को थायरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज या ट्राइकोडर्मा विरिडि 5 ग्राम प्रति किलो बीज या थायरम 2 ग्राम, कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति किलो बीज या इनोसिगिनिया 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें तत्पश्चात राइजोबियम 5 ग्राम, पीएसबी 5 ग्राम प्रति किलो बीज दर के हिसाब कर बुवाई करें।

खाद व उर्वरक

सामान्यतः चने में 20 किग्रा नत्रजन, 60 किग्रा स्फुर व पोटाश की मात्रा 20 किग्रा प्रति हे. की दर से प्रयोग करें। चने की फसल में अनुशंसित मात्रा में खादों का प्रयोग करने हेतु इसकी पूर्ति सिंगल सुपर फॉस्फेट 3 क्विंटल, यूरिया 40 किग्रा या डी.ए.पी. 100 किग्रा+ जिप्सम (11 प्रतिशत) किग्रा प्रति हे. की दर से देकर की जा सकती है। गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद 5-8 टन प्रति हे. की दर से डालें।

बुवाई का समय व विधि

अधिक उत्पादन के लिए समय पर बुवाई आवश्यक है। 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक का समय सबसे उपयुक्त। परन्तु सिंचित अवस्था में नवम्बर तक बुवाई की जा सकती है।

दूरी

कतार से कतार 30 से.मी., पौध से पौध की दूरी 10 से.मी. एवं गहराई 6-8 से.मी. पर करें।

सिंचाई

प्रथम सिंचाई फूल आने से पूर्व लगभग 40-45 दिन व दूसरी सिंचाई घेंटी में दाना भरते समय 75-80 दिन की फसल पर करें।

● सीता चौधरी ● डॉ. एन के मीना
● एम. पी. सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ
● डॉ. आर. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक
sitachoudhary110@gmail.com

सरसों की उन्नत खेती

सरसों और राई भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में शामिल हैं। सरसों के हरे पौधों को पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में तथा बीज, तेल और खली को पशुओं के आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। इसकी खली का शीतल प्रभाव होने के कारण यह कई रोगों की रोकथाम में सहायक होती है। खली में निम्न पोषक तत्व नाइट्रोजन: 4-9 प्रतिशत, फॉस्फोरस: 2.5 प्रतिशत और पोटाश: 1.5 प्रतिशत पाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों के कारण विभिन्न देशों में जैविक खाद के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

सरसों का महत्व और उपयोग

भारत में सरसों एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। इसके बीज से 30-48 प्रतिशत तक तेल प्राप्त होता है। इसके तेल का उपयोग खाना पकाने, मालिश करने, साबुन और ग्रीस बनाने, फल और सब्जियों के संरक्षण के लिए किया जाता है।

मृदा

रेतीली से लेकर भारी मटियार मिट्टी में सरसों की खेती संभव है। बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी हल्की क्षारीय हो सकती है। लेकिन अम्लीय मिट्टी फसल के लिए हानिकारक होती है।

जलवायु

सरसों की खेती के लिए शरद ऋतु (रबी मौसम) आदर्श होती है। फसल के लिए 18-25 डिग्री सेल्सियस का तापमान उपयुक्त है। फूल आने के समय अधिक आर्द्रता, बारिश, और बादल फसल के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन परिस्थितियों में माहू या चौपा कीट का प्रकोप बढ़ सकता है।

खेत की तैयारी

सरसों की खेती के लिए भुरभुरी मृदा सर्वोत्तम होती है। खरीफ की फसल कटने के बाद एक गहरी जुताई करें, फिर 3-4 बार देसी हल से जुताई कर के पाटा लगा कर खेत को समतल और भुरभुरा बनाना आवश्यक है। असिंचित क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में खेत खाली छोड़ने से जल संरक्षण में मदद मिलती है।

दीमक और अन्य कीटों के प्रकोप को रोकने के लिए अंतिम जुताई के समय क्विनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालें। एजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर (2-3 किलोग्राम) को 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर अंतिम जुताई के समय खेत में डालें।

बुवाई

सरसों की बुवाई के लिए 25-26 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आदर्श रहता है। 15 अक्टूबर से पहले सरसों की बुवाई करने से एफिड या माहू का प्रकोप कम आता है। कतारों में बुवाई करे। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी व पौधों से पौधों की दूरी 10 सेमी रखें। बीज की गहराई सिंचित क्षेत्र में 5 सेमी तथा असिंचित क्षेत्र में नमी के अनुसार रखें।

बीज मात्रा

शुष्क क्षेत्रों में 4-5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्रों में 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की मात्रा पर्याप्त होती है। बुवाई से पहले बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सिंचित क्षेत्रों में 8-10 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई से 4 सप्ताह पहले तथा बारानी क्षेत्रों में 4-6 टन सड़ी खाद वर्षा से पहले प्रति हेक्टेयर खेत में समान रूप से डालें। सिंचित क्षेत्र के लिए नत्रजन (नाइट्रोजन) 80 किलोग्राम, फॉस्फोरस 30-40 किलोग्राम और गंधक (जिप्सम) 60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करे। नत्रजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें। तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के समय दें।

सिंचाई

यदि वर्षा पर्याप्त हो तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। जल की कमी होने पर कम से कम 2 सिंचाई करें। पहली सिंचाई बुवाई के 30-40 दिन बाद, दूसरी सिंचाई (फली बनते मय) 70-80 दिन बाद। यदि जल सीमित हो तो केवल एक सिंचाई (फूल आने के समय) 40-50 दिन की फसल में करें।

निराई-गुड़ाई और खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के 20-25 दिन बाद पहली निराई करें। छंटाई के द्वारा पौधों की संख्या नियंत्रित करें, और पौधों के बीच 8-10 सेमी की दूरी रखें। सिंचाई के बाद गुड़ाई करें। इससे खरपतवार नियंत्रित होता है और मिट्टी में नमी संरक्षित रहती है।

इस प्रक्रिया को सही ढंग से अपनाने से सरसों की फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। प्याजी खरपतवार की रोकथाम के लिए फ्लूम्लोरेलिन (1 लीटर सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर) रसायन का छिड़काव करें। सूखी बुवाई की स्थिति में पहले बुवाई करें, फिर फ्लूम्लोरेलिन का छिड़काव करके सिंचाई करें। जो की खरपतवार के प्रसार को रोकने में मदद करता है।

कटाई

सरसों की फसल 120 से 150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। जैसे ही पौधों की पत्तियाँ और फलियाँ पीली पड़ने लगें तुरंत कटाई करें। समय पर कटाई न करने पर फलियाँ चटकने लगती हैं, जिससे उपज में 5-10ब तक की कमी हो सकती है। कटाई के दौरान सुनिश्चित करें कि सत्यानाशी खरपतवार का बीज या फल फसल में न मिले। सत्यानाशी के बीज से फसल का तेल दूषित हो सकता है, जिससे ड्रॉपसी नामक बीमारी हो सकती है।

उत्पादन

उन्नत तकनीक अपनाने पर असिंचित क्षेत्रों में 15-20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 20-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। सरसों की फसल की उपज को बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकों का पालन, समय पर सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, और कटाई पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

निष्कर्ष

सरसों की उन्नत खेती के लिए सही प्रजाती का चयन, उचित भूमि की तैयारी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण जरूरी है। आधुनिक तकनीको एवं वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर उपज में वृद्धि की जा सकती है। जिससे किसानो की आय में सुधार होगा।

सरसों की उन्नत किस्में

डीआरएमआर 1165-40 (रुक्मणी)

यह सरसों की एक उन्नत किस्म है इसके पौधे की ऊंचाई 177-196 सेमी होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 22-26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसके बीजों में तेल की मात्रा 40 से 42.5 प्रतिशत तक होती है। यह सरसों किस्म 135-151 दिन में तैयार हो जाती है। सिंचित और असिंचित दोनों ही स्थितियों में सरसों की यह किस्म बेहतर पैदावार देती है।

डीआरएमआरआईसी 16-38 (बृजराज)

सिंचित क्षेत्रों में देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की ऊंचाई 188 से 197 सेमी और बीज आकार 2.9 से 5 ग्राम है। यह किस्म 120 से 149 दिन की अवधि में परिपक्व हो जाती है। और इसमें तेल की मात्रा 37.6 से 40.9 प्रतिशत होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम होता है।

डीआरएमआर 2017-18 (राधिका)

सिंचित स्थिति में देर से बुआई के लिए सरसों की यह किस्म बेहतर है। DRMR 2017-15 सरसों किस्म की औसत उत्पादन क्षमता 1788 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। इसके बीज में तेल की मात्रा 40.7 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म की परिपक्वता अवधि 120 से 150 दिन की है। सरसों की इस किस्म में अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, सफेद जंग, तना सड़न, कोमल फफूंद और चूर्णी फफूंद और एफिड का प्रकोप भी कम है।

डीआरएमआर 150-35 (भारतीय सरसों)

इस सरसों की पैदावार क्षमता 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें तेल की मात्रा 39.8 प्रतिशत तक होती है। पौधे की ऊंचाई 164-186 सेमी और परिपक्वता अवधि 114 दिन होती है।

डीआरएमआरआईजे-31 (गिरिराज)

सरसों फसल की एक उन्नत और प्रमाणित किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा 39-42.6 प्रतिशत तक की होती है। इसकी पैदावार क्षमता 23-28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की है। इसके पौधे की ऊंचाई 180-210 सेमी होती है। और परिपक्वता 137-153 दिन की है।

आरएच 30

यह किस्म सिंचित और असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। गेहूं, चना, और जौ के साथ अंतरवर्तीय फसल के लिए आदर्श। पौधों की ऊँचाई लगभग 196 सेंटीमीटर, शाखाएँ 5 या अधिक। पकने का समय 120-130 दिन। उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ।

टी-59 (वरुणा)

यह 8 प्राथमिक शाखाओं वाली देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। फूल आने का समय 45-50 दिन व पकने का समय 130-135 दिन है। तेल की मात्रा 36 प्रतिशत , उपज 15-18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर (असिंचित)। दाने मोटे और काले रंग के। मोयले के प्रकोप से बचने के लिए 15-20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

पूसा बोल्ड

इस किस्म की ऊँचाई मध्यम व फलियाँ मोटी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 37-38 प्रतिशत व उपज 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

बायो 902 (पूसा जयकिसान)

यह रोग प्रतिरोधी किस्म होती है। इसमें सफेद रोली और मुरझान रोगों का प्रकोप कम होता है। पौधे की ऊँचाई 160-180 सेमी होती है। पकने का समय 130-140 दिन होता है। तेल की मात्रा 38-40 प्रतिशत व उपज 18-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। तथा इसका दाना झड़ता नहीं व कालापन लिए भूरे रंग का होता है।

समस्या -समाधान

समस्या- सिंचित गेहूं में खरपतवार विशेष कर बथुआ का प्रकोप बहुत होता है, नियंत्रण के उपाय बतायें।

- शिवनारायण

समाधान- आपका क्षेत्र गेहूं धान वाला क्षेत्र है

जिसमें बथुआ की समस्या बहुत आती है। इसके नियंत्रण के लिये समय सीमा का बहुत महत्व है यदि समय से निंदाई और खरपतवारनाशी का उपयोग नहीं किया गया हो तो खर्च व्यर्थ सिद्ध होता है। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के समय से नियंत्रण किये जाने से फसल को पोषक तत्वों को होने वाले बंटवारे से निजात मिल जाती है। आप कृपया निम्न करें।

- बुआई के 30-35 दिनों के भीतर ही एक निंदाई हाथों से वो भी दो पौधों के बीच में छुपे खरपतवारों को निकालें।
- एक स्प्रे 2-4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 500-700 ग्राम मात्रा प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करें।
- इसके अलावा पेन्डीमिथालिन का 1000 ग्राम/ हेक्टर की दर से छिड़काव किया जा सकता है।

समस्या- गेहूं में कंडुआ रोग के उपचार के उपाय बतायें।

- अमर सिंह तोमर

समाधान - आपका प्रश्न सामयिक है कंडुआ रोग एक ऐसा रोग है जिसका उपचार रोग आने के बाद संभव नहीं होता है। वास्तविकता यह है कि कंडुआ रोग की फफूंदी बीज के साथ भीतरी भाग में छुपी रहती है जो अंकुरण के साथ-साथ तने से होती हुई विकसित बालियों तक पहुंच जाती है। रोगग्रस्त पौधे एवं स्वस्थ पौधों में कोई फर्क नहीं दिखता और जब बाली झंडे में से फूटती है तब दानों की जगह काली फफूंदी दिखाई देती है जिस पर एक पतली झिल्ली भी रहती है रोग की फफूंदी हवा से उड़कर खेतों में फूलते गेहूं की बालियों में परागीकरण क्रिया के समय ही दानों में फिर से छुप कर बैठ जाती है रोगग्रस्त दाने भी सामान्य दानों के जैसे ही दिखते हैं जिनको बोने पर कई गुना बढ़कर कंडुआ आने वाले साल में दिखता है। आप निम्न उपाय करें।

- जिस खेत में गेहूं पर कंडुआ दिखा हो उस खेत का बीज आने वाले साल में कतई नहीं लगायें।
- यदि लगाना ही पड़े तो विटावैक्स नामक दवा की दो ग्राम मात्रा/किलो बीज के हिसाब से अनिवार्य रूप से उपचारित करके ही बोयें।
- रोगग्रस्त व बालियों को पॉलीथिन के बैग में इकट्ठा करके नष्ट करते रहें।

समस्या- चने की फसल में हर वर्ष उकटा रोग आता है। नियंत्रण या बचाव के उपाय बतायें।

- चैनलाल पाटीदार

समाधान- चने का उकटा रोग सामान्य रूप

से आता है। उकटा रोग की फफूंदी मिट्टी में रहती है। तथा साल दर साल पनपती रहती है। इस रोग के नियंत्रण के बजाय बचाव के उपाय अधिक कारगर हैं कृपया आप निम्न करें।

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करके मिट्टी में छुपी फफूंदी को नष्ट करें।
- बुआई पूर्व बीज का उपचार ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से अथवा 2 ग्राम थाईरम/किलो बीज का करें।
- हर वर्ष एक ही जमीन में चने की खेती नहीं करें।
- रोग रोधी जातियां जैसे जे.जी. 315, जे.जी. 74, जे.जी. 11, जे.जी.130, जे.जी.16 भारती, जे.जी.63, जे.जी.322, विजय श्वेता, काक 2, बी.जी. 1053 इत्यादि ही लगायें।
- चना के साथ अलसी की अंतरवर्तीय फसल लगायें दो कतार चने के साथ 1 कतार अलसी की लगायें।
- ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर सीमित क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में मिट्टी में डालें।

समस्या- चने की इल्ली के प्रभावी नियंत्रण के लिये कौन -कौन से कदम उठाना चाहिये ताकि हानि से बचा जा सके।

- मेहरबान सिंह

समाधान - चना आपके क्षेत्र की प्रमुख रबी फसल है और चने की इल्ली से पूर्व में हर वर्ष अच्छा खासा संघर्ष करना पड़ता था जब जाकर चना बच पाता है। वर्तमान में इल्ली के प्रभावी नियंत्रण के लिये एकीकृत कीट नियंत्रण के बिंदुओं की परख हो चुकी है। आप भी निम्न बिंदुओं को अपनाकर हानि से बच सकते हैं।

- खेत में सोयाबीन के पौधों को तुरन्त उखाड़ कर चारे जैसा उपयोग कर लें ऐसा करने से चने की मादा को अंडे देने से रोका जा सकता है।
- खेत में जगह-जगह टी आकार की खूटियां लगा दें ताकि चिड़िया/मिट्ठू उस पर बैठकर इल्लियों को खा सकें।
- इल्ली की प्रथम अवस्था पर पहले जैविक कीटनाशी का उपयोग करें।
- चने की पत्तियों की तुड़ाई करें।
- इल्ली दिखने पर यदि हानि के स्तर से ऊपर अर्थात् 3 इल्ली प्रति मीटर कतार में दिखे और चने की घेटियां बनना शुरू हो गई हो तो एक छिड़काव प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1.5 लीटर या क्विनालफॉस 25 ई.सी. 1 लीटर 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

समस्या- मसूर लगा रखी है इस फसल में कितनी सिंचाई कर सकते हैं ताकि अच्छा उत्पादन मिल सके।

- धर्मेन्द्र सिंह

समाधान- मसूर आमतौर पर वर्षा आधारित

स्थिति में लगाई जाती है। आपके क्षेत्र में कई जगह मसूर, धान काटने के बाद बिना खेत बनाये उतेरा फसल की तरह भी लगाते हैं। आपके पास यदि सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं अच्छा उत्पादन केवल सिंचाई करके नहीं लिया जा सकता है। आपने यदि फसल में उर्वरक का उपयोग किया है तो निश्चित ही सिंचाई से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। मसूर में पहली सिंचाई फसल बुआई के 30 से 40 दिनों बाद तथा दूसरी सिंचाई बुआई के 70 -80 दिनों बाद करनी चाहिये। इस बीच यदि शीतकालीन वर्षा हो गई हो तो सिंचाई कदापि नहीं करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____
कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

साग–सब्जियों में छिपा अच्छी सेहत का राज

मामूली समझ दरकिनार कर दी जाने वाली साग-सब्जियों को वैज्ञानिकों ने ज्यादा सेहतमंद करार दिया है। ब्रिटेन स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पॉलीमाउथ और इंस्टीट्यूट ऑफ फूड, ब्रेन एंड बिहैवियर के वैज्ञानिकों के अनुसार, 19वीं सदी में लोग सामान्य साग-सब्जियों व फलों का ज्यादा इस्तेमाल करते थे। इससे वे सेहतमंद रहते थे क्योंकि इनमें शरीर के लिये सभी आवश्यक तत्व पाए जाते हैं।

19वीं सदी का आहार आज भी कारगर

- पांच हजार कैलोरी रोजाना ग्रहण करने के बावजूद लोगों की पाचनशक्ति रहती थी दुरूस्त
- साग, प्याज, गोभी, चुकंदर,

जलकुंभी जैसी सब्जियां व सेब, चेरी जैसे फल खाते थे लोग।

- मछली और मांस भी उल्लेखनीय मात्रा में भोजन में शामिल थे, जो बेहद पोषक होते हैं।

धूम्रपान से परहेज

- खेतों और कारखानों में कामगार लोग धूम्रपान और शराब से परहेज करते थे।
- शकरकंद जैसे कंदमूल का इस्तेमाल करने से प्रतिरक्षा प्रणाली ठीक रहती थी।
- यीस्ट युक्त ब्रेड खाने से भी लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मिलती थी मजबूती।

इलाज की कम जरूरत

व्यक्ति अपने जीवन का करीब एक दशक इलाज के भरोसे गुजारता है। पुरूष में यह आंकड़ा 7.7 वर्ष व महिला के लिये 10 साल है। पर राबॉथम का मानना है कि 19 वीं सदी में लोग ज्यादा सेहतमंद होते थे। क्योंकि उनके खानपान में हरी सब्जियां, फल व मांस शामिल होता था।

हड्डियों की रक्षा करती है सर्दी की धूप

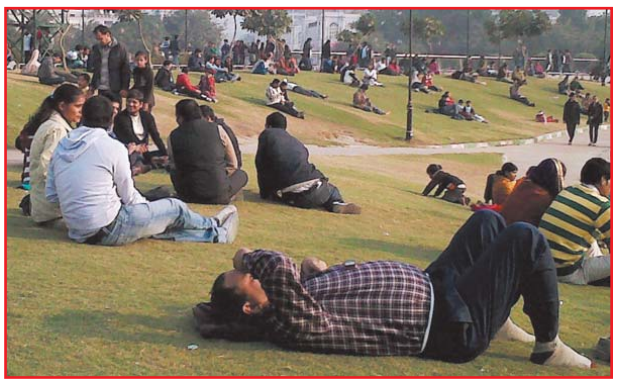

● सर्दियों में धूप सुहानी हो जाती है। धूप एक ऐसा टॉनिक है जिसके सेवन पर खर्च भी नहीं होता, किंतु लाभ ढेर सारे होते हैं।

● यह विटामिन डी का सबसे बढ़िया और निःशुल्क स्त्रोत है अतः सर्दियों में धूप सेवन का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

● हमारी त्वचा में एर्गेस्टरॉल नामक एक पदार्थ होता है, जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों से विटामिन डी में बदल जाता है।

● विटामिन डी का सेवन मनुष्य को स्वस्थ, निरोगी तथा दीर्घायु बनाए रखता है।

● वैज्ञानिकों ने 67 हजार लोगों पर इसका अध्ययन किया और पाया कि जो लोग इसका सेवन करते थे, उनमें स्वास्थ्य समस्याएं बहुत कम पाई गई हैं।

सभी जानते हैं कि कैल्शियम हड्डियों की मजबूती के लिए कितना जरूरी है। यदि आप पर्याप्त मात्रा में धूप का सेवन करते हैं तो हड्डियों से जुड़ी बीमारियों से बचाव हो सकता है। वैज्ञानिकों ने अध्ययन में पाया कि यह विटामिन न केवल मांसपेशियों को मजबूत बनाता है अपितु शरीर में ऑस्टियोकैल्किन नामक प्रोटीन के निर्माण में भी मददगार होता है जिससे फ्रैक्चर के खतरे कम हो जाते हैं।

शोधकर्ता डॉ. स्टीवर्ट के अनुसार धूप शरीर के लिए बेहद जरूरी है, क्योंकि यह सीधे तौर पर हड्डियों के स्वास्थ्य से जुड़ी होती है। शरीर में विटामिन डी की कमी से हड्डियों की सतह कमजोर हो जाती है, जो असहनीय दर्द का कारण बन जाता है। शरीर के भार का केंद्र कमर होती है। रीढ़ की हड्डी पूरी तरह कमर पर टिकी होती है। विटामिन डी की कमी से रीढ़ के लिए शरीर का भार ढो पाना बड़ी चुनौती बन जाती है। सूर्य की किरणें यानी धूप इस समस्या से निजात दिलाती है।

नींबू: स्वाद में खट्टा, गुण में मीठा

❖ सुबह–शाम एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर पीने से मोटापा दूर होता है।

❖ बवासीर (पाइल्स) में रक्त आता हो तो नींबू की फांक में सेंधा नमक भरकर चूसने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।

❖ आधे नींबू का रस और दो चम्मच शहद मिलाकर चाटने से तेज खाँसी, श्वास व जुकाम में लाभ होता है।

❖ नींबू ज्ञान तंतुओं की उत्तेजना को शांत करता है। इससे हृदय की अधिक धड़कन सामान्य हो जाती है। उच्च रक्तचाप के रोगियों की रक्तवाहिनियों को यह शक्ति देता है।

❖ एक नींबू के रस में तीन चम्मच शकर, दो चम्मच पानी मिलाकर, घोलकर बालों की जड़ों में लगाकर एक घंटे बाद अच्छे से सिर धोने से रूसी दूर हो जाती है व बाल गिरना बंद हो जाते हैं।

❖ एक गिलास पानी में एक नींबू निचोड़कर सेंधा नमक मिलाकर सुबह–शाम दो बार नित्य एक महीना पीने से पथरी पिघलकर निकल जाती है।

आठ पहर क्या हैं, जानिए

दिन–रात मिलाकर 24 घंटे में हिंदू धर्म अनुसार आठ पहर होते हैं। औसतन एक प्रहर तीन घंटे का होता है जिसमें दो मुहूर्त होते हैं। एक पहर तीन घंटे या साढ़े सात घटी का होता है। एक घटी 24 मिनट की होती है। दिन के चार और रात के चार मिलाकर कुल आठ पहर। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने का समय निश्चित है। प्रत्येक राग प्रहर अनुसार निर्मित है।

आठ पहर के नाम– दिन के चार पहर– पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह और सायंकाल। रात के चार पहर– प्रदोष, निशिथ, त्रियामा एवं उषा। प्रत्येक पहर में गायन, पूजन, जप और प्रार्थना का महत्व है।

आठ पहर – एक पहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय के समय दिन का पहला पहर प्रारंभ होता है जिसे पूर्वान्ह कहा जाता है। दिन का दूसरा पहर जब सूरज सिर पर आ जाता है तब तक रहता है जिसे मध्याह्न कहते हैं। इसके बाद अपरान्ह (दोपहर बाद) का समय शुरू होता है, जो लगभग लगभग 4 बजे तक चलता है। 4 बजे बाद दिन अस्त तक सायंकाल चलता है। फिर क्रमशः प्रदोष, निशिथ एवं उषा काल।

अष्टयाम– वैष्णव मन्दिरों में आठ पहर की सेवा–पूजा का विधान अष्टयाम कहा जाता है। वल्लभ सम्प्रदाय में मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या–आरती तथा शयन के नाम से ये कीर्तन–सेवाएं हैं।

कण–कण में हैं भगवान

भगवान कण-कण में विराजमान हैं। यह बौद्धिकता है, किंतु परमात्मा को प्रकट करना हार्दिकता है। तन के लिए जीतना भोजन आवश्यक है, मन के लिए भजन उतना ही आवश्यक है, जैसे बिना भूख के समय होने पर भोजन कर लेते हैं, वैसे ही मन न लगने पर समय से भजन करें। परमात्मा का मिलन संत की कृपा से होता है। राम-सुग्रीव का मिलन भगवान हनुमान जी जैसे संत ही करा सकते हैं। जब कोई काल से डरता है तो संत भगवान की स्मृति दिलाकर उसे निर्भय करते हैं। जब कोई भगवान से न डरे तो संत काल का भय दिखाकर उसमें भय उत्पन्न कर भगवान से जोड़ देते हैं। विभीषण ने हनुमान जी में भगवान को देखा। भक्ति विज्ञान है, अंधविश्वास नहीं। जैसे पानी में बिजली है, इसको जानकार बिजली पैदा करते हैं, यह विज्ञान है। कण-कण में परमात्मा विराजमान हैं। यह भाव ही श्रेष्ठ है।

जिस प्रकार से सूर्योदय होने से घोर कोहरा छंट जाता है, उसी प्रकार भक्ति से पाप कर्म धुल जाता है। कितनी ही धर्मार्थ यात्रा, गंगा स्नान, यज्ञ, धर्म, पाठ कर लें, किंतु एक भक्ति ही उसे अपने अधीन बना लेती है। सच्चे भक्त को कर्म-धर्म करने की आवश्यकता नहीं होती। भगवान जिनके रोम-रोम में है, जिसके मुंह से सूर्य के समान ज्वालाएं निकल रही हैं, जिनमें अनंत मात्रा का ऐश्वर्य हो, ऐसे श्रीकृष्ण ही हैं। उनकी हमें पांच भावों - शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की उपासना करनी चाहिए। इन सबमें श्रेष्ठ माधुर्य भाव ही है।

माधुर्य भाव ही सर्वाधिक सामिप्य है। इस भाव में हम प्रेयसी हैं, वे हमारे प्रियतम हैं, ऐसी भावना निरंतर रहती है। अब लौकिक उदाहरण के अनुसार जैसे प्रेयसी का संबंध पति से अत्यंत निकट का होता है, पुत्र का उससे कम, सखा का उससे कम, दास का उससे भी कम तथा प्रजा का संबंध कम निकट का होता है। हमें भगवान श्रीकृष्ण की माधुर्य भाव से भक्ति करनी चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

17 से 30 नवम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
अगहन कृष्ण 13 से अगहन शुक्ल 10 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
17	नवम्बर	सोम	अगहन कृष्ण	13 प्रदोष व्रत
18	नवम्बर	मंगल	----------	13 शिव चतुर्दशी व्रत
19	नवम्बर	बुध	----------	14
20	नवम्बर	गुरु	----------	30 स्ना.दा. अमावस
21	नवम्बर	शुक्र	अगहन शुक्ल	1
22	नवम्बर	शनि	----------	2
23	नवम्बर	रवि	----------	3
24	नवम्बर	सोम	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
25	नवम्बर	मंगल	----------	5 विवाह पंचमी
26	नवम्बर	बुध	----------	6
27	नवम्बर	गुरु	----------	7 पंचक 10.2 दिन से
28	नवम्बर	शुक्र	----------	8 पंचक
29	नवम्बर	शनि	----------	9 पंचक
30	नवम्बर	रवि	----------	10 पंचक

राज्य में अवैध परिवहन की जा रही 19 हजार क्विंटल धान जब्त

मार्कफेड ने जारी किए 1 से 16 नवंबर तक के आंकड़े

रायपुर। छत्तीसगढ़ में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी प्रारम्भ होने के पूर्व से ही प्रदेश में अवैध परिवहन से आने वाले धान की कड़ी निगरानी रखी जा रही है। पिछले एक नवंबर से 16 नवंबर तक लगभग 19 हजार 320 क्विंटल धान जब्त किया गया है। इस बार मार्कफेड द्वारा राज्य में अवैध परिवहन के जरिए अन्य राज्यों से छत्तीसगढ़ आने वाले धान को रोकने के लिए राज्य के सीमावर्ती जिलों में चेकपोस्ट और कलेक्टर की अध्यक्षता में टॉस्कफोर्स भी बनाए गए हैं। इसके साथ ही मार्कफेड में स्थापित इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के माध्यम से समर्थन मूल्य पर धान खरीदी व्यवस्था की सतत् निगरानी की जा रही है।

मार्कफेड द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले एक नवंबर से 16 नवंबर के अवधि में सीमावर्ती विभिन्न जिलों से छत्तीसगढ़ राज्य में अवैध परिवहन के माध्यम से आने वाले धान में सर्वाधिक महासमुंद जिले में 4266 क्विंटल धान जब्त किया गया है। इसी प्रकार बलरामपुर जिले में 4139 क्विंटल, सूरजपुर जिले में 1750 क्विंटल, रायगढ़ जिले में 1201 क्विंटल, जशपुर जिले में 1157 क्विंटल, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले में 967 क्विंटल, कोण्डागांव जिले में 869 क्विंटल, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में 687 क्विंटल, राजनांदगांव 607 क्विंटल, मुंगेली में 490 क्विंटल, बलौदाबाजार में 386 क्विंटल, बिलासपुर में 273 क्विंटल, कोरिया में 253 क्विंटल, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई में 250 क्विंटल, सरगुजा में 240 क्विंटल, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में 228 क्विंटल, दंतेवाड़ा में 220 क्विंटल, बस्तर जिले में 218 क्विंटल, सक्ती में 137 क्विंटल, सुकमा में 130 क्विंटल, बालोद में 123 क्विंटल, गरियाबंद में 122 क्विंटल, जांजगीर-चांपा में 119 क्विंटल, कवर्धा में 90 क्विंटल, कोरबा में 85 क्विंटल, रायपुर में 84 क्विंटल, धमतरी में 72 क्विंटल, नारायणपुर में 53 क्विंटल, दुर्ग में 38 क्विंटल, बेमेतरा में 32 क्विंटल, मोहला-मानपुर-चौकी में 27 क्विंटल धान जब्त किए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के पूर्व प्रदेश में अवैध धान परिवहन और संग्रहण पर सख्त निगरानी जारी रखते हुए आज दो महत्वपूर्ण कार्रवाईयाँ की गईं। मार्कफेड के इंटीग्रेटेड कंट्रोल सिस्टम से प्राप्त 600 बैग (231.5 क्विंटल) अवैध धान संबंधी अलर्ट पर तत्काल कार्रवाई करते हुए कोंडागांव जिले की टीम ने मौके पर पहुंचकर धान जप्त किया। इसी क्रम में रात्रि गश्त के दौरान ग्राम त्रिशूली थाना सनवाल क्षेत्र में अशोक सिंह पिता रामचरित्र के घर के बाहर बने शेड में दो अलग-अलग स्थानों पर कुल 222 कट्टा (88.8 क्विंटल) धान पाया गया। विवाद की स्थिति को देखते हुए दिन में पुनः तहसीलदार रामचंद्रपुरपुर, थाना प्रभारी सनवाल, महिला पुलिस तथा मंडी कर्मचारियों की मौजूदगी में विस्तृत जांच की गई और धान की विधिवत जप्ती की कार्रवाई पूरी की गई। शासन ने स्पष्ट किया है कि धान खरीदी व्यवस्था में किसी भी प्रकार की अनियमितता और अवैध गतिविधि को हर स्तर पर जीरो टॉलरेंस के साथ रोका जाएगा।

टमाटर की खेती से किसान बन रहे आत्मनिर्भर

रायपुर। शासन की किसान हितैषी योजनाओं एवं उद्यानिकी फसलों की असीम संभावनाओं के कारण अब राजनांदगांव जिले के किसान पारंपरिक फसलों के साथ-साथ उद्यानिकी फसलों की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। इसी कड़ी में विकासखण्ड राजनांदगांव के ग्राम गातापारखुर्द के प्रगतिशील किसान श्री सुरेश सिन्हा ने आधुनिक पद्धति से पॉलीहाउस में टमाटर की खेती कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। उन्होंने टमाटर की 'माल्या वैरायटी' की फसल लगाकर लगभग 2 लाख 35 हजार रूपए का लाभ अर्जित किया है।

श्री सिन्हा ने बताया कि पॉलीहाउस में उपयुक्त तापमान बनाए रखते हुए मल्चिंग विधि का उपयोग किया गया, जिससे फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई। टमाटर की बाजार में अच्छी मांग होने से प्रति क्विंटल 700 से 800 रूपए की दर प्राप्त हुई। यहां उत्पादित टमाटर कोरबा, कोलकाता, उत्तर प्रदेश, ओडिशा सहित स्थानीय बाजारों में भी भेजा जा रहा है।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत संरक्षित खेती के लिए पॉलीहाउस निर्माण हेतु 17 लाख रूपए का शासन द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ। पॉलीहाउस की कुल लागत 34 लाख रूपए रही। इसके अतिरिक्त पैक हाउस निर्माण हेतु 2 लाख रूपए का अनुदान तथा दवाई छिड़काव के लिए स्ट्रिप मशीन पर 50 प्रतिशत अनुदान शासन द्वारा प्रदान किया गया।

श्री सिन्हा के पास कुल 15 एकड़ कृषि भूमि है, जिसमें से 8 एकड़ में धान एवं 7 एकड़ में सब्जियों की खेती की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 1.5 एकड़ में लौकी की फसल से लगभग 35 टन उत्पादन हुआ, जिससे उन्हें 50 प्रतिशत की शुद्ध आमदनी प्राप्त हुई। पॉलीहाउस में टमाटर के साथ खाली स्थान का उपयोग करते हुए उन्होंने मिश्रित खेती के रूप में फूलगोभी, नवलकोल, प्याज और मूली की फसलें भी लगाई हैं।

श्री सिन्हा ने बताया कि धान की तुलना में सब्जियों की खेती से तीन से चार गुना अधिक आमदनी होती है। इसमें कम पानी की आवश्यकता होती है और एक वर्ष में तीन से चार फसलें ली जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि उद्यानिकी विभाग से समय-समय पर तकनीकी मार्गदर्शन एवं परामर्श प्राप्त होता रहता है, जिससे खेती में नई तकनीकों का लाभ मिल रहा है।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/-
⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम ..... पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

प्रदेश में 14 नई सिंचाई परियोजनाओं को मिली सैद्धांतिक सहमति

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ सिंचाई परियोजना मंडल की 33वीं बैठक

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रालय महानदी भवन में छत्तीसगढ़ सिंचाई परियोजना मंडल की 33वीं तथा वर्तमान सरकार के कार्यकाल की पहली बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश की सिंचाई क्षमता बढ़ाने, भूजल स्तर सुधारने और शहरी क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति को सुदृढ़ बनाने पर विस्तृत विमर्श किया गया। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों के लिए 14 नई परियोजनाओं को सैद्धांतिक सहमति प्रदान की गई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की आय में वृद्धि और कृषि उत्पादन बढ़ाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य से सिंचाई नेटवर्क का लगातार विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सिंचाई रकबा बढ़ने से न केवल किसानों को लाभ मिलेगा बल्कि भूजल स्तर में सुधार होगा और पेयजल आपूर्ति को बेहतर ढंग से सुनिश्चित किया जा सकेगा।

बैठक में सरगुजा, बस्तर सहित मैदानी इलाकों तक सिंचाई सुविधाओं के विस्तार पर व्यापक चर्चा की गई। मुख्यमंत्री ने सभी परियोजनाओं की रूपरेखा, लागत और उनके लाभों की विस्तृत जानकारी ली और कहा कि प्रदेशभर में संतुलित विकास सुनिश्चित करने के लिए इन परियोजनाओं को गति प्रदान की जाएगी।

गौरतलब है कि इन परियोजनाओं के माध्यम प्रदेश में लगभग 01 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त सिंचाई क्षमता में वृद्धि होगी। इन परियोजनाओं में बस्तर जिले के अंतर्गत देउरगांव बैराज सह उद्वहन सिंचाई परियोजना, बस्तर जिले के अंतर्गत मटनार बैराज सह उद्वहन सिंचाई परियोजना, रायपुर जिले के विकासखण्ड आरंग में महानदी पर मोहमेला सिरपुर बैराज योजना, अहिरन से गाजरीनाला जल संवर्धन निर्माण (खारंग अहिरन लिंक परियोजना) कार्य, बिलासपुर जिले के कोटा विकासखण्ड अंतर्गत छपराटोला फीडर जलाशय परियोजना, कुम्हारी जलाशय जल क्षमता वृद्धि (जलावर्धन) योजना के अंतर्गत समोदा बैराज से कुम्हारी जलाशय तक पाईप लाईन बिछाने का कार्य, दुर्ग जिले के विकासखण्ड धमधा के सहगांव उद्धवहन सिंचाई योजना, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले में लमती फीडर जलाशय एवं नहरों का निर्माण कार्य, राजनांदगांव जिले में स्थित मोहारा एनीकट में पेय जल हेतु चौकी एनीकट से मोहारा एनीकट तक पाईप लाईन के माध्यम से जल प्रदाय योजना, जशपुर जिले के मैनी नदी में बगिया बैराज सह दाबयुक्त उद्ववहन सिंचाई योजना की स्वीकृति, जांजगीर-चांपा जिले के हसदेव बांगों परियोजना अंतर्गत वृहद परियोजना ऑगमेण्टेशन के अंतर्गत परसाही दाबयुक्त उद्ववहन सिंचाई परियोजना, कोरबा जिले के अंतर्गत मड़वारानी बैराज निर्माण सह उदवहन सिंचाई योजना, गरियाबंद जिले के पैरी परियोजना के अंतर्गत सिकासार जलाशय से कोडार जलाशय लिंक नहर (पाईप लाईन) योजना तथा बिलासपुर जिले के खारंग जलाशय योजना के बाएं तट नहर के आर्वधन हेतु पाराघाट व्यपवर्तन योजना से उद्धवहन फीडर सिंचाई का निर्माण कार्य शामिल किया गया है।

बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव, कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम, वित्त मंत्री श्री ओ पी चौधरी, मुख्य सचिव श्री विकास शील, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध कुमार सिंह, ऊर्जा विभाग के सचिव श्री रोहित यादव, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मुकेश कुमार बंसल, जल संसाधन विभाग के सचिव श्री राजेश सुकुमार टोप्पो, प्रमुख अभियंता श्री इंद्रजीत उइके सहित जल संसाधन विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद रहे।

कृभको का स्वच्छ पेयजल कार्यक्रम

अम्बिकापुर। कृभको सरगुजा द्वारा अंगीकृत ग्राम समूह के अंतर्गत ग्राम-बरगवां, नवापारा जिला- सरगुजा (छ.ग.) में स्वच्छ पेयजल कार्यक्रम का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आशुतोष चंद्राकर, राज्य प्रबंधक, कृभको-छत्तीसगढ़, विशिष्ट अतिथि श्री दिमेन्द्र कुशवाहा, कृभको प्रतिनिधि, सरगुजा एवं श्री कामेश एक्का, अध्यापक, शासकीय माध्यमिक शाला मोतीपुर के आतिथ्य में तथा किसानों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम मुख्य, विशिष्ट अतिथि एवं समस्त प्रतिभागियों का स्वागत श्री मनीष कुमार द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को कृभको के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गयी, तत्पश्चात मुख्य अतिथि श्री आशुतोष चंद्राकर के द्वारा जल का मानव जीवन में उपयोग को लेकर विस्तृत जानकारी दी, सामूहिक स्थानों पर स्वच्छ जल की उचित व्यवस्था में योगदान को लेकर कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को बताया एवं आदिम जाति सेवा सहकरी समिति-दरिमा तथा शासकीय माध्यमिक शाला मोतीपुर को एक-एक वोल्टास वाटर डिस्पेंसर कृभको के पेयजल सुविधा कार्यक्रम के अंतर्गत नि:शुल्क प्रदान किये गये, विशिष्ट अतिथि श्री दिमेन्द्र कुशवाहा,कृभको प्रतिनिधि, सरगुजा द्वारा कार्यक्रम का आभार व्यक्त किया गया, अंत में श्री मनीष कुमार, क्षेत्रीय प्रतिनिधि, कृभको,सरगुजा द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का संस्था की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

जहाँ ICL का साथ
वहाँ समृद्धि का विश्वास

गेहूं की सुनहरी बालियाँ हों, चने की हरी फलियाँ या टमाटर की
लाल चमक —ICL Fertilizers हर फसल को देता है संतुलित पोषण।

सही समय पर सही पोषक तत्व, जिससे मिट्टी भी मुस्कुराए और पैदावार भी बढ़े।
ICL के साथ अब हर किसान बोले — मेरे खेत में उन्नति की गारंटी है!

✆ 1800 210 3031 880 618 51 95 www.icl-growingsolutions.com

ICL | BIOZ ICL | Select™ | PeaK | Polysulphate | FertiFlow™ | NutriVant™ Foliar Nutrition Line

✆ 1800 210 3031 880 618 51 95
www.icl-growingsolutions.com